

DR. RANJEET KUMAR

Dept. Of History

H. D. Jain College Ara

M.A , sem.- 2, CC-7, unit-5

सविनय अवज्ञा आंदोलन

भारत के आधुनिक इतिहास में सविनय अवज्ञा आंदोलन स्वतंत्रता की लड़ाई का सबसे बड़ा, सबसे व्यापक और निर्णायक चरण था। यह आंदोलन ब्रिटिश शासन के खिलाफ अहिंसक असहयोग और शांतिपूर्ण अवज्ञा के सिद्धांत पर आधारित था जिसे महात्मा गांधी ने न सिर्फ प्रचारित किया, बल्कि नितांत व्यावहारिक रूप से लागू भी किया। इसमें आम जनता, किसानों, मजदूरों, छात्रों, महिलाओं और गांव-शहर के लोगों ने बिना हिंसा किए ब्रिटिश कानूनों का उल्लंघन किया।

यह आंदोलन केवल ब्रिटिश शासन का विरोध नहीं था, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन की पुनर्स्थापना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। इसमें न केवल लड़ाई की गई, बल्कि लोगों को अपने अधिकारों का अनुभव कराया गया और उनके मन में राष्ट्रीय चेतना का जन्म हुआ।

पृष्ठभूमि: आंदोलन क्यों शुरू हुआ?

सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू होने से पहले भारत में कई प्रमुख राष्ट्रीय-राजनीतिक गतिविधियाँ चल रही थीं:

अ. असहयोग आंदोलन का अनुभव

1919 से 1922 के बीच महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन हुआ, जिसमें अंग्रेजों की सरकारी नौकरियों, न्यायालयों और ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। किन्तु चौरी चौरा घटना के बाद गांधीजी ने यह आंदोलन अचानक रोक दिया क्योंकि उसमें हिंसा हो गई थी।

ब. राष्ट्रीय अविश्वास और ब्रिटिश नीतियाँ

1920 के दशक के अंत तक ब्रिटिश शासन की नीतियाँ जैसे बोझिल कर, विदेशी वस्तुओं का शक्तिशाली बहिष्कार, नमक एकाधिकार तथा अत्यधिक नियंत्रण ने भारतीयों का विश्वास खो दिया। लोगों को लगा कि केवल अहिंसक और शांतिपूर्ण असहयोग ही ब्रिटिश शक्ति को चुनौती दे सकता है।

साइमन कमीशन और ब्रिटिश भ्रम

1927 में ब्रिटिश सरकार ने साइमन कमीशन भेजा, जिसमें कोई भारतीय सदस्य नहीं था। यह भारतीयों के लिए अपमानजनक था और इसने राष्ट्रीय आंदोलन को और संगठित किया।

लॉर्ड इरविन की अधिसूचना

31 अक्टूबर 1929 को वायसराय लॉर्ड इरविन ने घोषणा की कि गोलमेज सम्मेलन बुलाया जाएगा, लेकिन इसमें स्पष्ट रूप से ब्रिटिश सरकार की नापाक सोच झलक रही थी। इससे कांग्रेस और गांधीजी का भरोसा घटने लगा।

इन सभी कारणों ने मिलकर भरतीयों में असंतोष और राष्ट्रीय चेतना को इतना बल दिया कि अब केवल बातचीत या सामान्य विरोध काफी नहीं था। इसलिए गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया।

आंदोलन की शुरुआत: दांडी मार्च

महत्वपूर्ण तिथि

सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत भारत में **12 मार्च 1930** को महात्मा गांधी ने साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) से एक विशेष लक्ष्य लेकर पैदल यात्रा प्रारंभ की।

दांडी की ओर पैदल मार्च

गांधीजी ने अपने साथ लगभग 78 सहयोगियों के साथ साबरमती से दांडी (गुजरात) तक लगभग 240 मील (लगभग 385 किलोमीटर) की दूरी पैदल तय की। इसी यात्रा को इतिहास में दांडी मार्च या नमक सत्याग्रह के नाम से जाना गया।

नमक कानून का उल्लंघन

6 अप्रैल 1930 को गांधीजी दांडी पहुँचे और उन्होंने समुद्री जल से बनने वाला नमक उठाकर सरकार के नमक कानून का प्रत्यक्ष उल्लंघन किया। उस समय ब्रिटिश शासन के अनुसार कोई भी भारतीय बिना सरकारी अनुमति नमक नहीं बना सकता था, क्योंकि इस पर सरकार का एकाधिकार था।

यह छोटा सा कार्य प्रतीकात्मक प्रतीक बन गया। इसके बाद लोग, चाहे गांव हों या शहर, सभी ने ब्रिटिश नमक कानून की अवज्ञा करनी शुरू कर दी और अपने स्तर पर नमक बनाना शुरू कर दिया।

आंदोलन का विस्तार

सविनय अवज्ञा आंदोलन केवल दांडी तक सीमित नहीं रहा। यह बहुत बड़े स्तर पर फैल गया। इसका विस्तार इस प्रकार हुआ:

अ. पूरे देश में अवज्ञा के प्रकार

- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार (Boycott of foreign goods).
- सरकारी करों का भुगतान न करना (No tax campaign).
- चौकीदारी करों का भुगतान न करना (Refusal to pay police protective taxes).
- विदेशी शराब दुकानों पर धरना (Protests at liquor shops).
- सरकारी नौकरियों और अदालतों का बहिष्कार.
- विद्यार्थियों और वकीलों का राष्ट्रीय-शैक्षणिक संस्थानों का उभार.

ब. विभिन्न प्रांतों में संघर्ष

- बिहार में लोगों ने चौकीदारी करों का भुगतान रोक दिया.

- बंगाल में खुले तौर पर प्रतिबंधित किताबें पढ़ी गईं.
- महाराष्ट्र में वन कानून की अवहेलना ने बड़ी ताकत पकड़ी.

सामाजिक विविधता

इस आंदोलन में महिलाएँ, गरीब, किसान, व्यापारी, विद्यार्थी सभी एक बड़े मंच पर आए। यह आंदोलन केवल शहरों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि गांवों और कस्बों तक फैल गया।

आंदोलन में प्रमुख क्रियाएँ और घटनाएँ

दांडी नमक सत्याग्रह

यह आंदोलन की पहली और सबसे प्रसिद्ध घटना थी। इसके बाद देशभर में लोगों ने नमक कानून का उल्लंघन किया, तथा अपने-अपने स्तर पर नमक बनाना शुरू किया।

वेदरान्यम मार्च

दांडी के बाद दक्षिण भारत में C. राजगोपालाचारी ने वेदरान्यम मार्च का नेतृत्व किया। उन्होंने ट्रिचिनोपोली से समुद्र तट तक पैदल मार्च किया और नमक कानून का उल्लंघन किया। इसके कारण उन्हें गिरफ्तार भी किया गया।

दरसाना सत्याग्रह

गुजरात के दरसाना नमक कार्यशाला पर किया गया सत्याग्रह व्यापक रूप से प्रसिद्ध हुआ, जहाँ सैकड़ों सत्याग्रही पुलिस के जुल्म का सामना करते हुए आगे बढ़े।

इन क्रियाओं ने ब्रिटिश शासन की नीतियों को चुनौती दी और यह दिखाया कि जनता अब शासन की मनमानी कानूनों को मानने को तैयार नहीं है।

ब्रिटिश शासन की प्रतिक्रिया

ब्रिटिश सरकार ने आंदोलन को दबाने के लिए कड़ा रुख अपनाया:

- बड़ी संख्या में राजनीतिक नेताओं और नागरिकों को गिरफ्तार किया गया।
- सरकारी दमन, पुलिस लाठीचार्ज, जेलों में डालना आम बात थी।
- आंदोलन के प्रभाव को रोकने के लिए कई राज्यों में कर्फ्यू और सुरक्षा कानून लगाए गए।

इन दमनात्मक उपायों ने आंदोलन को रोकने के बजाय और भी शक्ति प्रदान की क्योंकि जनता और ज्यादा दृढ़ता से ब्रिटिश शासन के खिलाफ खड़ी हुई।

गांधी-इरविन संधि (Gandhi-Irwin Pact)

5 मार्च 1931 को महात्मा गांधी और ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड इरविन के बीच एक समझौता हुआ जिसे गांधी-इरविन संधि कहा जाता है। इसके प्रमुख बिंदु थे:

- बिना हिंसा के आरोपों वाले सभी राजनीतिक कैदियों की रिहाई.
- कांग्रेस द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन को आंशिक रूप से स्थगित करने पर सहमति.

यह संधि आंदोलन के इस चरण को औपचारिक रूप से समाप्त करने का कारण बनी और अगले चरण के लिए रास्ता खोला।

आंदोलन के परिणाम

राजनीतिक परिणाम

- कांग्रेस अब केवल एक समूह नहीं रहा, बल्कि अखिल भारतीय राष्ट्रीय शक्ति बन गया।
- ब्रिटिश शासन को यह स्वीकारना पड़ा कि भारतीय जनता अब सरल विरोध से कहीं ऊपर उठकर आंदोलन कर रही है।

आर्थिक परिणाम

- विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी को अपनाने के कारण ब्रिटिश व्यापार को भारी नुकसान हुआ।
- विदेशी वस्तुओं की मांग में कमी आई और स्थानीय उद्योग को प्रोत्साहन मिला।

सामाजिक परिणाम

- महिलाओं और समाज के पिछड़े वर्गों ने आंदोलन में भाग लिया और राजनीतिक जीवन में अपनी जगह बनाई।
- गाँवों और कस्बों में राष्ट्रीय चेतना फैल गई और लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुए।

नैतिक और ऐतिहासिक प्रभाव

यह आंदोलन भारत के स्वतंत्रता संग्राम का सबसे व्यापक अहिंसक संघर्ष था जिसने दुनिया को यह दिखाया कि शक्ति केवल हिंसा नहीं बल्कि सत्य और दृढ़ता में भी होती है।

आंदोलन के प्रमुख नेता और योगदानकर्ता

सविनय अवज्ञा आंदोलन में कई नेता और कार्यकर्ता जुड़े, जिनके नाम आज इतिहास के पृष्ठों में स्वर्ण अक्षरों में लिखे गए:

- महात्मा गांधी (मुख्य नेतृत्व)।
- सरोजिनी नायडू (महिला नेता)।
- सी. राजगोपालाचारी (वेदरान्यम मार्च)।
- कमला नेहरू, भारत सिंह सहित अन्य कार्यकर्ता।

ये सभी अपनी भूमिका में अनुकरणीय थे और उन्होंने स्थानीय-राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन को मजबूती दी।

निष्कर्ष: आंदोलन का ऐतिहासिक महत्व

सविनय अवज्ञा आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक निर्णायक चरण है। इसने:

- ब्रिटिश शासन से लड़ने के नए तरीके सिखाए।
- लोगों को राष्ट्रीय चेतना और आत्मविश्वास दिया।
- महिलाओं और अन्य सामाजिक वर्गों को सार्वजनिक जीवन में सशक्त भागीदारी की प्रेरणा दी।
- स्वतंत्रता संग्राम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाई।

यह आंदोलन दर्शाता है कि जब एक पूरी जनता एक लक्ष्य और अहिंसा के सिद्धांत के साथ खड़ी होती है, तो कोई भी अत्याचारी शक्ति लंबे समय तक टिक नहीं सकती।
